IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 3, Issue 3, July 2023
Impact Factor: 7.301

शान्ता कुमार की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना

डॉ. लालजीत राम

असिस्टेंट प्रोफेसर- हिन्दी

पं० रामलखन शुक्ल राजकीय स्नातकोत्तर

महाविद्यालय आलापुर, अम्बेडकर नगर, उ०प्र०

शोध सारांश :- शांता कुमार हिंदी के प्रमुख कवि, कथाकार और पूर्व राजनीतिज्ञ हैं। हिमाचल प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री रहे शांता कुमार का काव्य राजनीति के साथ-साथ गहरी राष्ट्रीय चेतना से भी संपृक्त है। उनका काव्य-संग्रह 'धरती है बलिदान की' और 'हिमतरंगिनी' विशेष रूप से राष्ट्रीय भावना के लिए चर्चित है। शांता कुमार की राष्ट्रीय चेतना का– सांस्कृतिक राष्ट्रवाद।

भारत को केवल भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि हजारों साल की सांस्कृतिक परंपरा मानते हैं। हिमालय, गंगा, वेद-उपनिषद और ऋषि-परंपरा उनकी कविताओं में बार-बार आते हैं। बलिदान और देशभक्ति। स्वतंत्रता संग्राम और सीमा पर शहीद होने वाले सैनिक उनकी कविताओं के नायक हैं। 'धरती है बलिदान की' में वे लिखते हैं कि इस मिट्टी का कण-कण शहीदों के खून से सींचा गया है। सामाजिक समरसता और एकता। शांता कुमार का राष्ट्र जाति, भाषा और क्षेत्र से ऊपर है। वे पहाड़ी जीवन की सादगी को राष्ट्रीय चारित्र से जोड़ते हैं। राजनीतिक विसंगतियों पर प्रहार। एक राजनीतिज्ञ होते हुए भी वे राजनीति के अपराधीकरण और मूल्यहीनता पर तीखा व्यंग्य करते हैं। उनकी राष्ट्रीय चेतना अंध-राष्ट्रवाद नहीं है, बल्कि आत्म-आलोचना से भरी है।

इस प्रकार शांता कुमार का काव्य सांस्कृतिक गौरव, बलिदान की स्मृति, सामाजिक एकता और राजनीतिक शुचिता का आह्वान करता है। उनकी राष्ट्रीय चेतना भावुक नारे नहीं, बल्कि चिंतन और कर्म की मांग करती है। यही उन्हें समकालीन कवियों से अलग करती है।

मूल शब्द - सानिध्य, सरसराता, ठठरी, उत्प्रेरित, व्यष्टि, दांपत्य, अस्मिता, सत्तापक्ष, सशक्त, पारलौकिक, परतंत्रता

राष्ट्र के समक्ष अनेक चुनौतियों का सामना करने वाले और आस्था, विनम्रता, सहिष्णुता, सौहार्द एवं मानवता का नाम शान्ता कुमार है। इनके जीवन का आदर्श मानवीय भावना और क्रांतिकारी स्वभाव रहा है। कवि अपनी साहित्यिक जीवन के साथ-साथ राजनीतिक जीवन को कहीं रुकने नहीं दिया, क्योंकि सृजनात्मक शक्ति के द्वारा कवि समस्त समाज के माध्यम से एक स्वस्थ देश का निर्माण करना चाहता है। कवि राष्ट्रीय सेवक संघ का सच्चा सिपाही है, यह प्रेरणा उन्हें रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द और गीता से मिली एवं जीवन का आदर्श भी यही महापुरुष रहे। महात्मा गांधी एवं श्यामा प्रसाद मुखर्जी का सानिध्य पाकर कवि का आत्मबल और मजबूत हुआ जिसके कारण कवि को बहुत कम उम्र में जेल जाना पड़ा। इसका कारण समाज में फैला हुआ असंतोष आर्थिक, सामाजिक विषमता, जाति-पाति, छुआ-छूत के साथ अंग्रेजों का पूरे देश पर आतंक जैसी आये दिन घटनाएँ घटित हो रही थीं, आदि थे। इन समस्याओं से दूर न होकर कवि दोहरी चुनौतियों से लड़ता रहा था। एक तरफ राजनीतिक उठा-पटक का दायित्व था तो दूसरी तरफ समाज की समस्याओं को सही रूप में काव्य का विषय बनाना उनके लिए चनौतीपूर्ण कार्य था। वह देश की गरीबी, भूखमरी, अशिक्षा, उपेक्षित जीवन जीने वाले व्यक्तियों के लिए ऐसी योजनाओं को लाना चाहते थे, जिसमें गरीबी अमीरी का अन्तराल कम हो। इसके लिए स्वामी विवेकानन्द की 'दरिद्र नारायण' योजना तथा महात्मा गांधी का 'अन्त्योदय' योजना को लागू करवाना चाहते थे। उनका मानना था कि इन्हें अमीर तो नहीं बना सकते लेकिन भूखमरी से अवश्य बचाया जा सकता है। कवि ने राजनीतिक पहल से पूरे देश में अन्त्योदय योजना को लागू करवाया। यह हमें उनकी कविताओं में दिखायी पड़ता है-

"मुरझाया चेहरा /झुर्रियों की लकीरों में बुझा-बुझा /निराशा आँखों में गरीबी का दर्द /नंगे पाँवों में फटी काली बिवाइयाँ /मैले चिथड़ों में लिपटा/ लम्बी अंधेरी जिन्दगी का बोझ ढोता/ इंतजार की घड़ियाँ गिनता / यह कौन है।"1

कवि शान्ता कुमार का राष्ट्रीय सेवक संघ का उपनाम 'शान्ती' है। कवि ने अपने उपनाम को सचमुच चरितार्थ कर दिखाया। आपका अधिकतम समय देश में अमन-चैन और शान्ति के लिए समर्पित रहा, जिसके बदले उन्हें जेल में रहना पड़ा। उस समय कवि को श्यामा प्रसाद मुखर्जी, बाल गंगाधर तिलक जैसे लोगों का साथ मिला जिससे कवि का व्यक्तित्व निखर पड़ा। देश की बिगड़ती हुई हालत को देखकर आपातकालीन जैसी परिस्थितियाँ भारत के लिए तानाशाह सरकार के रूप में जानी जाती हैं, जिससे जयप्रकाश नारायण को आजादी के बाद का जन आन्दोलन का जनक माना जाता है। सन् 1974 ई० में पहली बार सरकार के विरोध में किसानों ने बिहार राज्य से आन्दोलन किया और दूसरी तरफ केन्द्र की सत्ता पर काबिज श्रीमती इन्दिरा गांधी

की प्रशासनिक नीतियों के खिलाफ लोगों के मन में आक्रोश पनप रहा था। इसका परिणाम हुआ कि अति उत्साही जनता भीड़ भरी जन सभा ने देश की बिगड़ती हालत, प्रशासनिक भ्रष्टाचार, महँगाई, बेरोजगारी, दिशाहीन शिक्षा प्रणाली के विरुद्ध आन्दोलन शुरू कर दिया। देश की जनता के दुःख-दर्द को कवि शान्ता कुमार ने अपनी राजनीतिक राष्ट्रीय भावनाओं को कविता में स्थान दिया, जिसका परिणाम हुआ कि सन् 1977 ई. में हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में उस लाचार जनता के साथ आप को देखा गया जिसके लिए आप लड़ते रहे। जनता के हिमायती जय प्रकाश नारायण का सकारात्मक प्रभाव कवि शान्ता कुमार की कविता 'फूल लेकर आये थे' में देखा जा सकता है, जिसमें वेदना प्रस्फुटित होती है, जो कविता के माध्यम से जाना जा सकता है-

"लाखों आँखें सजल थीं /चेहरा मुरझाए थे /सारा देश मानों /बासघाट पर आ गया था /गंगा मैया के गोद में **..........** /कह गया काश तुमने जय प्रकाश की /चिता जलने से पहले /जय प्रकाश के आँसू पोंछ दिये होते।'[2]

कवि शान्ता कुमार की कविताओं में पीड़ा है। वह इस संसार में करुणा की खोज करते हैं, उनकी वेदना एक ऐसे समाज की पीड़ा है, जिसे वह देख रहे थे। साधारण जनता किस तरह जीवन संघर्ष में पिसी जा रही है उसे महसूस कर रहे थे। मजदूर और किसान रात-दिन हाड़ तोड़ मेहनत के बावजूद भी गरीबी, अशिक्षा, और भूखमरी में डूबा हुआ है, जबकि साहूकार, जमींदार और शासक वर्ग उनकी ठठरी पर ठाठ कर रहा है। वर्ग वैमनस्य की इस समस्या को लेकर कवि शान्ता कुमार को सामाजिक संघर्ष करना पड़ा। इस सामाजिक सच को काव्य का विषय बनाया और आज इसी सत्य के अन्वेषण में आज भी वह जूझ रहे हैं। कवि के साहित्यिक संघर्ष की संवेदना उनके राजनीतिक जीवन को सर्वाधिक प्रभावित करती है, साथ ही राष्ट्रीय सेवक संघ के प्रति समर्पित होकर पूरे राष्ट्र की सेवा करना आप के जेहन में है। आप के लोकप्रिय कवि रामधारी सिंह 'दिनकर', मैथिलीशरण गुप्त, मुन्शी प्रेमचन्द, हरिबंशराय बच्चन, निराला आदि हैं। आपको इन सभी कवियों की छाप ने कहीं रुकने नहीं दिया। हिन्दी साहित्य में जनता की समस्या पर कविता लिखने वाले अनेक कवि हुए लेकिन जिस वेदना को शान्ता कुमार ने उठाया, वह उस समय की चुनौती है। इसे हम उनकी उस झोपड़ी के मालिक के पिचक रहे चेहरे की कविताओं के माध्यम से जान सकते हैं-

"झोपड़ी को देख/मैंने सोचा-/उसके उखड़ते-उड़ते बिखरते/ सूखे जर्जर तिनकों की /संख्या कितनी है /और फिर मेरी दृष्टि/उस झोंपड़ी के मालिक के/ पिचक रहे चेहरे के/गहरे काले गड्ढों में /चुभ-सी गयी /मैं फिर सोचा /उसके चेहरे पर /भरी जवानी में /ये झुर्रियाँ क्यों हैं। /कब से हैं /और कितनी हैं।'3

साहित्य और राजनीति की स्थिति पर समान चिन्तन करने वाले कवि शान्ता कुमार को कौन नहीं जानता है? यह नाम अपने त्याग एवं संघर्ष के लिए जाना जाता है। कवि के राजनीतिक जीवन की शुरुआत क्रांतिकारी भावना से हुई। इससे प्रभावित होकर उन्हें बहुत कम उम्र में जेल जाना पड़ा और देश में बड़ी घटनाओं को देखकर वे उत्प्रेरित हुए। श्यामा प्रसाद मुखर्जी और राष्ट्रीय सेवक संघ से कवि का सम्बन्ध अटूट है। तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक परिस्थितियों से वे अनुप्राणित हैं। उनके काव्य में समाज की दर्द-पीड़ा के गीत हैं। वही गीत का स्वर पूरे राष्ट्र को संदेश देता है। उनका अपना एक खास व्यक्तित्व है, चिन्तनधारा है। कवि कठिन परिस्थितियों से घबराता नहीं है। इसी कारण उनकी रचनाएँ प्रमाण के रूप में दिखाई पड़ती हैं।

कवि शान्ता कुमार का व्यक्तित्व भाषा, कला, सरलता, सामाजिक सरोकार एवं अपनी विशेष काव्य योजना के कारण अलग पहचान बनाते हैं। वे अपनी कविताओं में लगातार कोशिश करते हुए दिखाई पड़ते हैं। उनकी कविता में छटपटाहट नहीं है। उनकी कविताओं से संघर्ष की प्रेरणा मिलती है। 'मैं मैं न रहा' कविता में कवि अपने सामाजिक जीवन दायित्व का निर्वहन कर रहा है। वह बीच में भटकाव नहीं चाहता है, अपने लक्ष्य को पाने के लिए सदैव प्रयासरत है, क्योंकि वही उनके कविताओं का उद्देश्य है-

'अब मुझे आवाज मत दो
क्योंकि तुम्हारी आवाज के लम्बे इंतजार में
मैं पूरी तरह चूक चुका हूँ।"4

कवि सामाजिक अव्यवस्था से ऊपर उठकर एक कुशल सामाजिक समरसता की कामना करता है। कवि की अगली कविता ' अपने ही भार से' में आशावादी दृष्टि दिखाई पड़ती है। जिस प्रकार कोई राही चलते-चलते पूरी तरह से थक गया हो लेकिन अपने लक्ष्य की उम्मीद न छोड़ी हो वैसे ही -'सब राह चलते/तुम्हें देख ठिठक जाते थे/तुम यों तनकर खड़ी थी/जैसे धौलाधार की सबसे ऊँची चोटी बर्फ पड़ने के बाद धूप की किरणों के प्रतिविम्ब में/चमकती खड़ी रहती है।" यहाँ व्यष्टि के माध्यम से समष्टि के विकास को योजनाबद्ध ढंग से प्रस्तुत करना कवि का दायित्व है। 'इस बार की होली' शीर्षक कविता में कवि का दाम्पत्य जीवन निखर उठता है। एकतरफ उनके प्रेम की गहरी अनुगूँज सुनाई पड़ती है तो दूसरी तरफ देश की तत्कालीन समस्या भुखमरी की त्रासदी, भारत पर चीन का आक्रमण, लोकनायक जयप्रकाश नारायण का जन आन्दोलन, आपात काल जैसी समस्या से कवि प्रभावित होकर जेल में, कभी संघ के साथ सामाजिक आन्दोलन के समय पर, होली में परिवार से दूर रहकर अपनी उस वेदना को कविता के माध्यम से व्यक्त करता है। यह वेदना समग्र समाज को प्रभावित करती है और कवि आने वाली होली में परिवार के साथ रहने की उम्मीद करता है। इससे

स्पष्ट है कि त्याग से देश का बदलता हुआ परिदृश्य कवि की भावनाओं के अनुकूल है। यह कविता के रूप में इस प्रकार है- "खेली होली, पर खिली नहीं/गुलाब की लाली नहीं चटकी/संगीत की धुन थी कहीं भटकी/तुम्हारे बिन प्रिय/सब था फिर भी नहीं था/न थी वह उमंग न वह तरंग/इक रस्म सी हो--------ली।" 5 इस कविता में मानवीय संवेदना मुखर उठती है।

कवि शान्ता कुमार एक राजनीतिक क्रान्तिकारी कवि के रूप में हैं। एक तरफ हिन्दुस्तान का पूरा लोकतन्त्र जेल के शलाखों में कैद था, वहीं जयप्रकाश नारायण के विचारों के पक्षधर किस प्रकार उनसे अलग हो सकते थे? 26 जून 1975 को आपात काल की घोषणा के बाद लगभग 13 हजार लोग बन्दी बनाये गये जिसमें शान्ता कुमार भी शामिल थे। देश में अनेक उठापटक के बाद 18 जनवरी 1977 को आपातकाल खत्म हो गया। देश में 19 वर्ष के बाद पुनः आजादी वापस आयी। ऐसी दशा में परिवार से पत्र आना स्वाभाविक था। एक क्रांतिकारी कवि का प्रेम उसी प्रकार दिखायी पड़ता है, जिस प्रकार पूरे राष्ट्र के अमन-चैन के लिए जेल जाना। कवि की सृजनात्मक भावना उसके पत्रों में लिखी गयी कविताओं से लगाया जा सकता है। "मैं विवश बन्दी" में कवि का बन्दी होना कोई लाचारी नहीं है, वह समग्र जनता की पीड़ा को अपनी पीड़ा मानते हैं- 'दूर हूँ तुमसे/बस इसलिए-/मजबूर हूँ- लेकिन/ये दूरियाँ-मजबूरियाँ/दो तनों को बाँट सकती हैं/पर उन दो तनों का/श्वास एक/प्रश्वास एक/आत्मा एक/धड़कनों की चेतना एक।''7 इनकीकविताओं में सामाजिक बदलाव का स्वर सुनाई पड़ता है। वे कविताएँ इस प्रकार हैं- 'तू न मिली तो', 'तुम्हारा दर्द', 'तुम्हारे प्यार की पाती', मीत तुम्हारा', तुम्हारी याद आयी', 'आज तो तूफान का मौसम', 'तुम्हारी याद' और 'तुम्हारा झूठ हारे गा'। ये कविताएँ भारतीय अस्मिता का स्वरूप प्रस्तुत करती हैं, साथ ही राष्ट्रीय गौरव की भावना उनकी प्रत्येक पंक्तियों में सुनायी पड़ती हैं। आपातकालीन जैसे कानून का सहारा लेकर एक तरफ सत्ता पक्ष देश में बेरोजगारी, भूखमरी, शिक्षा आदि समस्याओं को दबा रही थी, वहीं इसके विरोध में लोकनायक जयप्रकाश नारायण, मोरार जी देसाई अपने अन्य साथियों के साथ संघर्ष कर रहे थे और सभी विरोधियों को जेल में बन्द किया जा रहा था, उन्हीं बन्दियों में कवि शान्ता कुमार जी नाहन जेल में थे, पत्नी संतोष शैलजा द्वारा पत्र लिखना लाजिमी था। पत्र पाने के बाद उस लिफाफे में कई कागजों के बीच जो शेर लिखे गये थे, वह आशा और उम्मीदों के बीच की एक कहानी थी, जो इस प्रकार है-

"उजाले अपनी यादों के
हमारे पास रहने दो,
न जाने किस गली में
जिन्दगी की शाम हो जाए।'8

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 3, Issue 3, July 2023 Impact Factor: 7.301

अर्थात् दुःख उनका साधन नहीं, जीवन है। वे जेल में बन्दी होने पर भी गौरव का अनुभव करते हैं। यही कारण है कि समाज में अनेक असमानताओं को समाप्त कर सुखी-सम्पन्न समाज की स्थापना करना कवि का ध्येय है, इसलिए वे अपने को आवेश से अलग नहीं कर पाते। इसी भावना से प्रभावित होकर पत्नी को ढाँढस बंधाते हुए पत्र लिखते हैं- "बुला ले अपनी यादों को /सजा ले सेज फूलों से/न जाने किस घड़ी में/ प्यार का अभिसार हो जाए ! /सजा ले अपनी अलकों को/ झुका ले अपनी पलकों को/ न जाने कब तुम्हारा प्यार/ फिर साकार हो जाए !/झटक दे वेदना की टीस /भुला दे दर्द की तड़पन /न जाने कब किसी की याद/ मधु की धार हो जाए !/जमाने को लगा दे आग /समय को आज दे तू मोड़ /न जाने कब पाँव का शूल/ गले का हार बन जाए !/निराशा छोड़ आगे बढ़/ गिरा दे वज्र संकट पर/ न जाने कब प्रतीक्षा में/ मिलन अभिसार हो जाए !/
तुम्हारे प्यार की पाती /रहे नित जेल में आती/ न जाने कौन-सी पाती /तुम्हारे पास ले आए !'9

कवि शान्ता कुमार के जीवन की पहली कविता जो 17 वर्ष की उम्र में लिखी गयी, जीवन की अपार सम्भावनाएँ और उम्मीदों के बीच चरित्र का निर्माण करती हैं। ये कविता सशक्त एवं सकारात्मक विचार उत्पन्न करती है। स्वामी विवेकानन्द जिस प्रकार शिक्षा के माध्यम से मनुष्य को लौकिक और पारलौकिक दोनों प्रकार से जीवन को सफल बनाना चाहते थे, वही प्रभाव कवि शान्ता कुमार के प्रारम्भिक जीवन पर दिखायी पड़ता है। धर्मशाला स्थित भागसूनाग झरने को देखकर कोमल मन से 'झरने क्यों झर-झर झरते हो' शीर्षक से कविता लिखी। महात्मा गांधी की विचारधारा सत्य अहिंसा और सत्याग्रह का प्रभाव कवि के कवित्व एवं राजनैतिक जीवन को स्वावलम्बी बनाता है। सत्य और न्याय का अनुकरण कर देश की सामाजिक सेवा करते रहे, यह स्वर उनकी कविता में देखा जा सकता है-

"झरने क्यों झर-झर झरते हो ? /निजनता के आँचल को /संगीत सुधा से भरते हो।/ तुमने छेड़ दिया है मेरी,/ हत्तंत्री के तार-तार को।/क्या है तुमने कहना मुझसे,/इंगित करते बार-बार जो/कंकड़-पत्थर मिलते पथ में,/लेकिन तुम बढ़ते रहते हो.......।'10

भारत देश अभी कुछ वर्ष पहले परतन्त्रता की गुलामी से मुक्त होकर आजाद हुआ था कि जम्मू कश्मीर में कुछ सियासतबाजों की वजह से सन् 1953 का आन्दोलन इतिहास में एक दुःखद घटना लेकर आता है। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी को बन्दी बनाया जाना और एक रहस्यपूर्ण ढंग से उनकी मृत्यु जैसी घटना से पूरे भारत में खलबली मच जाना लाज़मी था। डॉ. मुखर्जी का मानना था कि जम्मू कश्मीर भारत का एक अविभाज्य अंग है, जिसे अलग मानना ठीक नहीं है। उनका कहना था कि "एक देश में दो विधान, दो निशान और दो प्रधान, नहीं चलेगा नहीं चलेगा।" उस समय भारतीय संविधान के अनुच्छेद 370 में यह प्रावधान किया गया था कि बिना परमिट लिए जम्मू कश्मीर की सीमा के अन्दर प्रवेश नहीं किया जा सकताहै। डॉ. मुखर्जी इसके

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 3, Issue 3, July 2023 Impact Factor: 7.301

खिलाफ थे, इसके विरोध में 08 मई 1953 को कुछ लोगों के साथ दिल्ली से पंजाब के रास्ते होते हुए जम्मू कश्मीर पहुँचे, जिसमें बलराज मधोक, अटल बिहारी वाजपेयी, टेकचन्द्र, गुरुदत्त वैद्य और कुछ पत्रकार एक समूह में निकल पड़े। ऐसी घटना में एक क्रांतिकारी कवि अपने को किस प्रकार रोक सकता था? इनका मानना था कि भारत माता का मुकुट खतरे में है, भारत माता की रक्षा में कांगड़ा से कुछ लोग चल पड़े, जिसमें कवि शान्ता कुमार और साथियों को हिसार जेल में बन्दी बना लिया गया, उसी जेल में युवा क्रांतिकारी कवि ने अनेक रचनाएँ लिख डालीं, जिसमें भारत माता के दुःख-दर्द का गीत है- "कारा की काल कोठरी में" शीर्षक कविता की पंक्ति -"ओछे हथियारों से भी कभी, सत्य दबाए, दबा नहीं।/ लाठी-गोली की बौछारों में भी मतवाले हटे नहीं।/ज्यों-ज्यों अब्दुल्लाशाही ने सच्चाई पर प्रहार किया।/त्यों-त्यों मतवालों ने अपने जीवन सुमनों को वार दिया/ गोदी के लाल लुटे कितने, कितनी बहनों के भाई गए/ केसर की क्यारी काश्मीर में खून की होली खेल गए/ इस देश-प्रेम के बदले में, हमको यह कारागार मिला/ मातृभूमि के सेवा-पथ का, यह अनुपम उपहार मिला।'10

ऐसी स्थिति भारत के लिए बड़ी शर्मनाक थी। देश की अस्मिता को बचाने वाले के साथ ऐसी स्थिति का होना देशहित में नहीं था। देश की रक्षा में कितनी बहनों ने अपने पवित्र त्योहार 'रक्षाबंधन', 'जन्माष्टमी', 'बंधन की रक्षा' को भूलाकर देश की रक्षा की। 'अरे पतंगों' शीर्षक पर कवि ने कविता लिखकर बहनों की मर्यादाओं की रक्षा के लिए भाईयों ने अपने प्राणों का मोल नहीं किया और बहनों ने अपनी उस राखी और सिंदूर को भारत माता की रक्षा में आहूत कर दिया।

उपरोक्त रचनाओं में शुरू से अन्त तक कवि राष्ट्रीय भावनाओं सेहैं। उनकी भाषा में ओज है, भावों में एकता और विचारों में समृद्धि सभी के प्रति हृदय में अपार सागर लहराता है। अतीत को यथार्थ की पृष्ठभूमि पर प्रस्तुत करना उनकी सबसे बड़ी विशेषता है। कवि की दृष्टि में गरीव, मजदूर, किसान, सामाजिक रूप से वंचित की समस्याएँ सर्वोपरि है। राष्ट्रीय कवि रामधारी सिंह दिनकर की दो पंक्ति कवि के लिए-

प्रेरित करो इतर प्राणी को, निज चरित्र के बल से।
भरो पुष्प की किरण प्रजा में, अपने चारित्रिक बल से।

सन्दर्भ ग्रंथ-

1. तुम्हारे प्यार की पाती-शान्ता कुमार, परमेश्वरी प्रकाशन प्रीत बिहार, दिल्ली, पृष्ठ संख्या-16
2. वही पृ० सं0-12

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429

Volume 3, Issue 3, July 2023

Impact Factor: 7.301

3. वही पृ० सं0-22

4. वही पृ० सं०-36

5. वही पृ० सं०-39

6. वही पृ० सं0-43

7. वही पृ० सं0-46

8. वही पृ० सं०-53

9. वही पृ० सं०-54

10. वही, पृ० सं0-68

11. वही, पृ० सं0-72